वो पराया कुछ अपना सा था

— शाम्भवी प्रजापति

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Shaambhavi Prajapati 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-570-0

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: April 2026

॥ प्राक्कथन ॥

“हकीकत नहीं, तो ख़्वाब कह दिया ।
ये दिल मैंने तेरे नाम कर दिया ।
जब कर न पाए इश्क़ बयां,
तो कागज़ -ए- स्याही पर दिल
का हाल लिखा दिया ॥”

कुछ रिश्ते मुकद्दर की लकीरों में नहीं,
महज़ अहसासों की नमी में जिंदा रहते हैं।
न कोई नाम, न कोई वास्ता,
फिर भी रूह के सबसे करीब रहते हैं।
यह किताब उन्हीं अनकही जज्बातों पर है,
जहाँ कोई अजनबी चुपके से दिल में घर कर गया।
न वो पूरी तरह पराया था, न मुकम्मल तौर पर मेरा, बस….. **“वो पराया कुछ अपना सा था।”**

{ शाम्भवी प्रजापति }

14/02/2026

☆.......

हम- ख़्वाब होकर भी
महज़ एक ख़्वाब ही था,
वो मेरी ज़िन्दगी का एक
टुटा हुआ सपना सा था,
वो पराया कुछ अपना सा था।
मेरी सूखी हुयी तक़दीर कि
तिश्ना -ए- ज़मीं पर
वह कतरा -ए- शबनम सा था,
वो पराया कुछ अपना सा था।
मेरे दिल की दीवार -ए-दरार पर
लगा हुआ मरहम सा था,
वो पराया कुछ अपना सा था॥

........☆

(1)

उन्हें हमारे बारे में सोचने की फुर्सत नहीं,
उनके मुरीद बहुत हैं।
मगर खुदा ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे,
हमें उम्मीद बहुत है ॥

(2)

उनके बारे में क्या बताऊँ ,
उन्हें तो सारा शहर जानता है।
उनके प्रेम के काबिल नहीं मेरा दिल,
ये तो बस उनके कदमो में अपना
स्थान चाहता है ॥

(3)

तुम ही क्यूँ पसंद हो मुझे,
कभी फुर्सत मिले तो सोचूँ मैं।
तुममें क्या अच्छा लगता है,
कभी फुर्सत मिले तो सोचूँ मैं ।।
जिंदगी में काफ़ी कुछ है चाहने को
मगर.... तेरी चाहत से फुर्सत मिले
तो कुछ और चाहूं मैं ।।
पाने को कहते हैं लोग बहुत कुछ,
मेरे हाथ तेरे हाथ से खाली हों
तो कुछ और चीज पाऊँ मैं ।।
यूँ तो लाखों हसीन हैं इस दुनिया में
मगर.... तेरी नज़र से नज़र हटे तो
दुनिया देखूँ मैं ।।

(4)

हमारी तरह हम पर ना मर।
हमारी तरह हम पर ना मर,
कम -से- कम हमसे इश्क़ तो कर ।।

(5)

आग के पास जाने से शमा पिघल गयी,
आग के पास जाने से शमा पिघल गयी।
उनके इंतजार में राह ताकते हमारी
आँखें जल गयी,
वो खुद तो किसी और के पास से हो कर
आ रहे हैं और कहता है कि ...
तुम बदल गयी।।

(6)

मेरे दिल में बहुत अंधेरा है
यहाँ शमा का कोई काम नहीं,
अब मशाल लाया जाये।
मेरे मरे हुए दिल को जीवन- दान
मिल जाये, अगर मेरा यार मुझे बस
एक नज़र आ जाये ।।

(7)

मुझे लगा वो मुझे भूल गया था,
मगर इससे बड़ा स्पस्टीकरण
और क्या होगा कि...
हमने उन्हें गुलाब का फूल दिया था,
और उन्होंने उसे चुम लिया था ॥

(8)

अब मुझे फर्क नहीं पड़ता, मैंने सोचा था।

मगर…

मेरे दिल कि धड़कने बढ़ गयी थी जब उन्होंने

मुझे पलट कर देखा था ॥

(9)

बड़े दिनों बाद वो मेरी गली से गुज़र रहा था,
उसे देखा तो याद आया....
मेरा दिल फिर से धड़क रहा था ॥

(10)

हमारी आँखों में ये दर्द - ए - इश्क़

का जाम ना होता।

अगर उनके दिल में किसी

और का नाम ना होता।।

(11)

मेरी तरह लड़ती नहीं होगी वो तुमसे,
बात -बात पर झगड़ती नहीं होगी ।
बिना बात के तुम्हे तंग भी नहीं करती होगी।
और एक बात कहुँ ?
तुम्हे मेरी तरह चाहती भी नहीं होगी ।।

(12)

उन्हें हमसे प्यार नहीं ना सही,
उन्हें हमसे प्यार नहीं ना सही।
लेकिन वो मेरी किस्मत में नहीं,
ऐ सोच कर मैं उन्हें चाहूँ नहीं
ऐ मेरे बस में नहीं ॥

(13)

नज़ारें तो बहुत हैं धरती पर मगर,
इन निगाहों को उनके सिवा कोई
और नहीं दीखता।
जीवन में काम तो बहुत हैं
करने को मगर,
इस दिल को उनके सिवा कुछ और
नहीं सूझता॥

(14)

मुझे आप से कुछ कहना है,
थोड़ा करीब आइए।
मुझे आपके साथ चलना है,
मेरा हाथ थाम लीजिए।
मुझे आप के पास रहना है,
अपने दिल में मेरा घर बना दीजिए।
मुझे आप से प्यार करना है,
मुझे से दिल लगा लीजिए।

(15)

बुझता है दिया हवाओं के स्पर्श से,
तो बुझ जाने दो।
मैं मरती हुँ हर पल उसकी याद में,
मुझे मर जाने दो॥

(16)

हम तो मासूम थे उस ज़माने में,
कसूरवार तो उनके रुख़सार -ए - तबस्सुम
ही थे कि हम उन पर दिल हार गए।
उनका इस दिल पर असर ही
कुछ ऐसा था कि हम उनके हो कर
ही रह गए ॥

(17)

दिल वालों को इज़ाज़त नहीं इश्क़ करने की।
कहते हैं कि…उन्हें इश्क़ करने की इज़ाज़त नहीं,
जो इश्क़ की गलियों में दिल लिए फिरते हैं।
ये खेल तो उनका है जो सीने
में दिल की जगह पत्थर रखते हैं ।।

(18)

बचपन की ख़्वाहिशें अब मुसालहत में ढ़ल रहे हैं।
कुछ बातें कह रहे हैं कुछ दिलों में दब रहे हैं ।।

(19)

बदले की आग में जलने से बेहतर
सुकून का रास्ता चुन लिया।
हमने अपने दुश्मनों को
उनके हाल पर ही छोड़ दिया।।

(20)

एक तरफ़ा मोहब्बत की बेग़ैरत तो देखिये!
एक पतंगा जल कर मर जाता है,
उस लौ की चाह में।
फिर भी वह जलता रहता है,
किसी दूसरे को जलाने की आस में।।

(21)

बड़ा बेग़ैरत लगता है मुझे मेरा दिल,
वो किसी और का है ये जान कर भी
उसे ही अपना सब कुछ मानता है।
ख़ुद-सार हैं ये निगाहें जो ,
तमाम मुज़ाहमत के बावजूद भी
उन्हीं पर जा कर ठहर जाती हैं ।।

(22)

ये दुनियां मतलबी है,
यहाँ मतलब के बिना कोई
किसी से बात तक नहीं करते।
जलाते हैं लोग शमा, कमरे को
रौशन करने के लिए मगर…
मोम के पिघल जाने का
कोई खयाल नहीं करते ।।

(23)

टूट गया जो कोई एक तारा,
आसमाँ में नूर कम नहीं है।
वो एक मात्र रहनुमा था मेरा,
मगर.... अब उसके जाने का
कोई ग़म नहीं है॥

(24)

वो एक रात की बात थी, जब
हमने उनसे दिल की बात की थी।।
और ये पूरी ज़िन्दगी की बात है ,
जो ता-उम्र उनके नाम कि है ।।

(25)

अगर उन्हें आना होता ,
उनके आने का कोई निशां तो
मिलता उनके आने से पहले ।
हमने उड़ते हुए चिड़ियों की परछाई
देखि है चिड़ियों से पहले ।।

(26)

तुझ पर भरोसा कर के समंदर में उतरे थे हम ,
सोचा था तू हमें ग़र्क होने से बचा लेगा ।
मगर.... जब लहरों ने हमारी लाश को
साहिल पर तेरा नाम सुनाया।
तब समझ आया,
हमें डुबाने वाला तू ही था ।

(27)

बदल जायेगा ये मौसम भी, शुभ्भो!
के जाड़ा साल भर नहीं रहता।
मैं उनकी जिंदगी की कहानी का
एक side character हुँ।
मेरे होने न होने से उन्हें कुछ खास
फर्क नहीं पड़ता ॥

(28)

जो ख़तम न हो कभी, तू वो सहरा है।
जिसे सोचते हुए पूरी जिंदगी तो क्या
कई सदियाँ भी कम लगे,
तू मेरा वो यादगार लम्हा है ॥

(29)

अपनी मोहब्बत इस कदर जताया था वो,
मेरी पसंद को अपनी पसंद बताया था वो।
इश्क़ का इज़हार तो कभी किया नहीं उसने,
मगर…मुझसे मिलने मेरी दी हुई शर्ट पहन
कर आया था वो ॥

(30)

किसी ने कहा - इश्क़ को ढूंढो,
हमने तुम्हें पाया।
किसी ने कहा - रब को जानो,
हमने तुम्हें जाना।
किसी ने कहा - खुद को पहचानो,
हमने तुम्हें पहचाना।
तुम्हें ही इश्क़, तुम्हें ही रब, तुम्हीं को
अपना सब कुछ माना, फिर भी
तू बन गया किसी और का दीवाना॥

(31)

खुदा करे हमारा मिलना दोबारा हो ।
बेशक़ तुम प्यार उसको देना ,
मगर…तेरा हर दर्द हमारा हो ।।

(32)

आप से तुम, तुम से तू हो गए।
फिर... देखते ही देखते हम,
अपने से ग़ैर हो गए॥

(33)

मोहब्बत क्या है, शुभ्भो ?

पा लिया तो सब कुछ ।।

खो दिया तो कुछ भी नहीं ।

(34)

पता नहीं तूम में ऐसा क्या है ,
जो तू मेरे लिए इतना खास है।
जो कह न पाए हम तुम्हें,
वो एक अनजाना एहसास है।
कह तो दें तुम्हें सब कुछ मगर..
हमें खुद भी नहीं पता कि
तू मेरे लिए क्या है ॥

(35)

फूल कभी दोबारा नहीं खिलता,
जो बिछड़ जाये वो कभी दोबारा
नहीं मिलता।
ज़माने में मिल जाते हैं दिल लाखों
मगर... हम जैसा दिलदार दोबारा
नहीं मिलता।
हाँ, रखती होगी वो तुम्हारा ख्याल
मगर... जैसे हमने तुम्हें चाहा था न,
कोई किसी को इतना चाहा नहीं करता।।

(36)

नशा तो शराब और इश्क़
दोनों में होता है।
बस शराब का नशा सुबह
तक उतर जाता है,
और इश्क़ का नशा जिंदगी
भर नहीं उतरता।
दोनों में फर्क बस इतना है,
शुभ्भो ! शराब को हम पीते हैं,
और इश्क़ हमें पी जाता है।।

(37)

उनसे मोहब्बत कमाल कि होती।
शुभ्भो! अगर उन्होंने भी, हमसे की होती।

(38)

एकतरफा प्यार होता है ,
अधूरी प्यास, अनकही बात,
और छूटा हुआ साथ वाला।
हमने उनसे प्यार का इज़हार किया,
और उन्होंने कह दिया....
"I love you too लेकिन दोस्त वाला" ॥

(39)

नादान था मेरा दिल, शुभ्भो !
ये इश्क़ की बातें समझता नहीं था।
वो नज़रें ही कुछ ऐसी थी,
वरना ये नयन किसी पर
ठहरता नहीं था।
उन्हें देख कर इस दिल में
उनकी प्यास जग उठी,
वरना किसी के लिए मेरा दिल
इस तरहा तड़पता नहीं था॥

(40)

नींद नहीं आती रातों में,
हम फिर भी सोना चाहते हैं।
ख़्वाबों में ही सही पर,
हम सिर्फ तुम्हें देखना चाहते हैं।।

(41)

आप की दिलकश अदाओं के कायल हैं ,
हम आप की दिलकश अदाओं के कायल हैं।
हाँ, कभी कहा नहीं आप से मगर...
इत्मीनान रखिये, हम आप की ही
नज़रों के तीर से घायल हैं ।।

(45)

देखना चाहा तो नज़रों से दूर हो गया,
पाना चाहा तो पहुँच से दूर हो गया।
हाथ थामना चाहा तो साथ छुट गया,
और जब हमने उसे चाहा वो किसी
और का हो गया॥

(46)

तू मेरी किस्मत में नहीं है।
यह सोच कर मैं तुम्हें न चाहूँ,
ये मेरे बस में नहीं है ।।

(47)

रोक नहीं सकती मुझे दुनिया की रस्में,
मैं मर कर भी तुझसे मिलने आऊँगी।
लोग चाहे कुछ भी कहें, बस..
तुम मुझ पर एतबार रखना
मैं क़ब्र में रहकर भी साथ निभाऊंगी।।

(48)

वो मेरी मोहब्बत को एकतरफा बताता था,

मगर…

मुझ से नज़रें मिलने पर शर्मा जाता था॥

(49)

तेरे दर्द से दिल आबाद है,
किसी और का हो के भी तू
मुझे याद है।
मेरी तरहा कहीं उसे भी राहों
में छोड़ न देना ,
मैं तो तुम्हारी असलियत से
वाकिफ़ हुँ मगर....
उसे तुम पर एतबार है॥

(50)

बरसाते हैं बादल आज भी,
मगर...वो बरसात नहीं।
बत्तीयाँ जलती हैं लोगों के
घरों में,
अब वो पहले जैसी अँधेरी
रात नहीं।
हम पूरी करना चाहते हैं
अधूरी बात मगर...
अब वो हमारे पास नहीं।।

(51)

दिल रोता है तुझे हमेशा सोच कर।
दर्द होता है तुझे किसी और का
होता देखकर।।

(52)

हमने सोचा अब तुम्हें याद नहीं करेंगे।
फिर सोचा... तुम्हें भूल कर और क्या
याद रखेंगे ॥

(53)

खुदा ने दर्द देने के लिए ज़ख़्म बनाया,
ज़ख़्म देने के लिए मेहबूब।
और शुभ्भो, इस ज़ख़्म को खुरेदने
के लिए लोग।।

(54)

कहने को दूर जा रहे हो मगर..
दिल में घर करते जा रहे हो।।

(55)

आओ बैठो पास कभी तो बताऊँ मैं,
कि कितनी चाहत है तुमसे।
तुम्हारी एक झलक को तरसती हैं
ये निगाहें,
के इस दिल को राहत है तुमसे ।
तुम्हारा तो हमें पता नहीं मगर…
हमको मोहब्बत है, सिर्फ तुमसे।।

(56)

कहनी है जो बतें तुमसे,
सुनाएँ भी तो कैसे।
तुम्हारे बिना जो दिल
का हाल है,
तुम्हें जतायें भी तो कैसे।
मेरी नज़रें तरसती हैं,
तुम्हें देखने को।
के कितना जरूरी हो तुम मेरे लिए,
तुम्हें बतायें भी तो कैसे ।।

(57)

उन्होंने कहा उन्हें चाहत से इनकार है,
तो फिर ये क्यूँ कहा कि…
‘हम यार हैं’ ॥

(58)

मुझे चाह नहीं के मैं उस चाँद को देखूँ,
मुझे चाह नहीं के मैं उस चाँद को देखूँ।
मेरा चाँद उससे ज्यादा खूबसूरत है॥

(59)

कभी ये मत सोचो कि कोई तुम्हें चाहेगा।
सर्पों को चन्दन की शीतलता से प्यार होता है,
चन्दन की सुरभि से नहीं ।।

(60)

जिंदगी जीने के लिए रुपयों की ज़रूरत नहीं।
तेरा प्यार मिल जाये तो काफी है।।

(61)

उसने हमसे दोस्ती की, मगर…
हमने अपना इश्क़ निभाया है।
और आज हवाओं में कुछ अलग
ही महक है, लगता है इनमे उसने
अपना इत्र मिलाया है॥

(62)

चुग्गा पक्षियों के घर लौटने के
लिए शाम होना ज़रूरी है।
मेरे दिल को उनके सिवा
कोई और नहीं भाता,
इन निगाहों में फिर से
प्यार होने के लिए
उनका पास होना ज़रूरी है।।

(63)

जिस दिन से मैंने हथेली पर अपना नाम
जोड़ कर लिखा तेरे नाम से।
तुम तो अपने हुए नहीं मगर...
लोगों ने मुझे बदनाम कर दिया
तेरे नाम से॥

(64)

जो कुछ चेहरा छुपा रहा था
वो आईने में साफ दिख गया।
महफ़िल में गलती से मेरे मुँह
से उनका नाम निकल गया।।

(65)

इतना लम्बा सफर तय करने
के बाद याद आया।
मज़िल तो कहीं और थी पर
दिल कहीं और आ गया॥

(67)

प्यासे को कुएँ की तलाश है,
और कुएँ को प्यासे की तलाश है।
हमारे दिल में उनकी प्यास है,
तो कहीं - न- कहीं उनके दिल में
भी हमारी आस है ।।

(68)

ख़्वाबों में मिलते हो, जानां !

मगर तु मेरा ख़ाब नहीं।

हम बस ऐसा सोचते हैं,

ये झूठ है कि तु मेरा प्यार नहीं।।

(69)

उसकी यादों को इस क़दर मफुज़ रखा है।
जैसे कोई करोड़पति अपनी दौलत
सफीना में छिपा कर रखता है ।।

(70)

अक्सर मोहब्बत से नफ़रत हो जाती है।
जब तुम किसी को टूट कर चाहो,
और उसे कोई और पसंद आ जाती है।।

(71)

उसकी असली अहमियत तब समझ आयी,
जब उसकी ज़िन्दगी में कोई और आयी॥

(72)

सूरज आज भी उगता है पूरब से
चाँद आज भी रौशन होता है रात में
और हम तड़पते हैं आज भी तुम्हारी
याद में।
मगर...जिस दिन उगेगा सूरज पश्चिम से
रौशन होगा चाँद दिन में,
समझ लेना कि हमने तुम्हें भुला दिया
के अब नहीं रहते तुम इस दिल में।।

(74)

खुदा करें तुम्हें मुझसे लाख गुना
बेहतर जीवन साथी मिले।
खुदा करें तुम्हें मुझसे बेहतर
जीवन साथी मिले ,
मगर...उसके बाद भी
तुम्हें मेरी कमी ख़ले ॥

(75)

इस दिल ने बादलों से बारिश के लिए फरियाद किया है।

लगता है मेरे मेहबूब ने मुझे याद किया है।।

(76)

तुम्हारी एक मुस्कान मेरे दिल कि राहत है,
मेरी धड़कनों का बढ़ना तेरे क़दमों कि आहट है।
इस दिल को आज भी सिर्फ तुम्हारी चाहत है,
कैसे कहें तुमसे कितनी मोहब्बत है।।

(77)

चाहत है हमें तुमसे,
ये बात हम कह नहीं पाते।
जो बात दिल में है,
वो लबों पर नहीं आते।।

(78)

हमें अपने दिल कि बात कहने

कि इज़ाज़त दीजिए।

बस एक बार ही सहीं हम पर

अपनी नज़र -ए- इनायत कीजिये ॥

(79)

सज़ा ये है कि हम उन्हे पा नहीं सकते।
मगर... शुभ्भो! सितम ये है कि हम उन्हें पाने
की दुआ तक नहीं कर सकते।।

(80)

समझायें तुम्हें, कैसे बतायें तुम्हें।

पाना तो चाहते हैं मगर...

कैसे अपनाएं तुम्हें ।।

(81)

आँखों ही आँखों से बातें होती है, शुभ्भो!
इज़हार -ए- इश्क़ होठों से नहीं की जाती।
वो हमसे प्यार करते हैं,
ये खुद तो कभी कहते नहीं
और हमारे दिल में सिर्फ़ वो रहते हैं
ये बात वो समझते नहीं ॥

(82)

चाहत है हमें तुमसे मोहब्बत है तुमसे,
हम तुमसे प्यार करते हैं।
इश्क़ हुआ है जब से इस दिल को मेरे तुमसे,
अब तो न जीते हैं न मरते हैं।।

(83)

नींद में देखे ख्वाब कहाँ हकीकत कहलाता है
आने को आती हैं बारिश मगर....
आँखें तो ये आँसू ही भीगाता है।
इस दुनियाँ में चाहत कहाँ पूरा हो पता है,
जिसे दिलों- जाँ से चाहो ,
उसे एक दिन कोई और ले जाता है।।

(84)

मेरे मासूम दिल को,
तुझ से अक़ीदत हो गई।
ये जानते हूए भी कि तू
मयस्सर नहीं, मैं ता-उम्र
सिर्फ तेरी हो गई ।।

(85)

आ कर हाथ थाम लो मेरा,
अगर मैं तुम्हारे काबिल हुँ।
ये दुनियाँ तो क्या, जानां !
मैं पूरी कायनात जीत लूँ
अगर तुम मुझे हासिल हो।।

(86)

सोचा था हर कागज़ पर तेरी तारीफ़ करुँगी,
मगर तुमने तो मेरे अरमानो की स्याही से
भरा वो तमाम कागज़ ही जाला दिया।
सोचा था हर कदम पर तेरी साथी रहूंगी,
मगर तुमने तो मेरा हाथ छोड़ किसी और
का हाथ थाम लिया।
मैं भले ही तुम्हारे लिए कुछ न हुँ मगर…
मैं फिर भी तेरे इश्क़ के लिए वफ़ादार रहूंगी।
तुम घर बसाओ किसी और के साथ,
मगर…मैं फिर भी अपने दिल में
तुम्हारे लिए जगह खाली रखूंगी ।।

(87)

जब से बड़े हूए हैं, शुभ्भो!
हमने जुगनूओं के पीछे
दौड़ना छोड़ दिया।
किसी ने इतना सताया कि
इश्क़ करना छोड़ दिया॥

(88)

उस दिन के बाद हमने उसे देखना

छोड़ दिया ,

उसकी तस्वीर अपने कमरे से हटा दिया।

उसके बाद बगीचे में फूल लगाना

छोड़ दिया ,

जिस फूल में उसकी खुशबू थी

उस फूल को जड़ से मिटा दिया ।।

(89)

खौफ़ खाते हैं हम दुनिया की रौशनी से
हमें अँधेरे में ही रहने दो।
रक़ाबत है हमारा साहिल से
मेरी कश्ती गिर्दाब में ही रहने दो॥

(90)

उनके आमद का यूँ असर हुआ,
वो आकर चले गए और हम देखते रह गए ॥

(91)

एक अरसा इंतजार के बाद
मेरे रब की रहमत हुयी।
उसने मुझे मुस्कुराकर देखा
और मैं देखती रह गयी ।।

(92)

बदल जायेगा ये दिन भी,
बस एक रात बाकि है, शुभ्भो !
निकल जायेगा मेरे दिल का गुबार भी,
बस उनका सामने आ जाना काफ़ी है ॥

(93)

तारीकी -ए- शब के बाद सहर का होना ज़रूरी है।
धड़कने चलने के लिए तेरा होना ज़रूरी है ।।
तुझसे दूर रह कर मैं कुछ भी नहीं, जानां !
मेरा कुछ होने के लिए तेरा होना ज़रूरी है ।।
तेरे बिना मेरी किस्मत के शाख -ए- गुल सुख सी
गयी हैं, जानां !
उम्मीदों के फूल खिलने के लिए तेरा होना ज़रूरी है।।
मेरी राहें मस्क़ूद हैं तेरे साथ के बिना, जानां !
मंज़िल -ए- मक़सूद के लिए तेरा साथ चलना ज़रूरी
है ।।

(94)

तुम्हारे साथ बैठ कर ये शाम देखना चाहते हैं।
शाम -ए- रुख़्सत में तेरी आँखों के समंदर में
डूबना चाहते हैं ।
मेरे बद-नसीब किस्मत से तेरे हाथों कि
ख़ुश- नसीब रेखाओं को मिलाकर अपनी
किस्मत आजमाना चाहते हैं।
और ना पूरी हो सके हमारी ये तमन्ना,तो फिर भी
हम बस एक बार तुमसे मिलना चाहते हैं ।।

(95)

रिस्ता क्या है तुमसे मेरा, मैं नहीं जानती ।
तुम्हें चाहता क्यूँ है दिल मेरा, मैं नहीं जानती।
चाहती तो हुँ कि भूल जाऊँ तुम्हें
पर भूलूँ कैसे, मैं नहीं जानती ।।

(96)

मन में जो है, वो खयाल हो तुम
दिल में छुपी गहरी बात हो तुम।
सुबह कि किरण के साथ हो तुम,
ढल जाये जो सूरज तो रात हो तुम।
आखिर कैसे भूल जायें तुम्हें, जानां !
ना हो कर भी हर पल मेरे साथ हो तुम।।

(97)

तुम जो छोड़ जाओगे हमें दर्द -ए- समंदर में,
तो किनारा कोई न होगा।
तुम तो हो जाओगे किसी और के
मगर हमरा कोई न होगा।

(98)

आप सपने देखते हैं,
हम सपने में आप को देखते हैं।
आप किसी और को देखते हैं,
हम हर किसी में आप को देखते हैं।।

(99)

एक ख़त लिखा है तेरे लिए,
पर तुझको दिया नहीं।
तूम ने कहा था हमेशा साथ रहोगे
मगर अब तूम पास रहे नहीं।
तुम ने कहा था, तुम समझते हो
मगर तुम ने मेरे ज़ख्मों को सीया नहीं।
तुम ने कहा था तुम कभी बदलोगे नहीं,
मगर तूम पहले जैसा रहे नहीं।

(100)

ज़िन्दगी ने ग़म दिया, अभी भी दे रही है।
शुभ्भो ! सपने तो हमने सजाये थे मगर…
हमारे सपनों को उनके साथ कोई और जी रही है।।

(101)

अब और सहन नहीं होता हमसे,
ये दर्द बर्दास्त से बाहर है।
शुभ्भो ! ग़म -ए- दिल को आखिर
तन्हा तो रहना ही था, क्यूंकि
हमने तमन्ना कि भी तो उसकी
जो हमारी औकात से बाहर है ॥

(102)

उनके तबस्सुम ने हमारा सब कुछ छीन लिया

पहले दिल लिया, फिर नींद ले गया

आख़िर में चैन भी छीन लिया।

और वो हमसे कहते हैं :- "मैंने क्या किया"।।

(103)

वैसे तो कुछ है नहीं हमारा, शुभ्भो !
मगर फिर भी वो मुझ पर मरता है।
मुलाक़ातें तो होती नहीं
मगर कभी मिल जाये जो राह में,
वो मुझे बड़ी शिद्दत से देखता है।।

(104)

अब चाह नहीं है, जानां !
कि कुछ और चाहूँ मैं।
अगर हम पर तेरी नज़र -ए- इनायत हो
तो तुझमें ही सारा संसार पा लूँ मैं ॥

(105)

चाँद तो उस फलक के क़रीब है,
मगर उसे देखते सब हैं।
और तुम भले ही किसी और के हो
मगर तुम्हें चाहते हम हैं॥

(106)

तुझसे दिल लगाने का कोई तो सिला दे
तू यकाना मालिक -ए- दिल है मेरा
अब ये तुझ पर है, इस टूटे दिल को
दफना दे या जाला दे ॥

(107)

तू मेरा सनम है, ये तेरा ही करम है।
जख़्म -ए- दिल दे कर भी
धड़कनों को जिन्दा रखा, जानां!
ये मुझ पर तेरा रहम है ।

(108)

हक़ीक़त यह थी कि वो एक सपना था।
मगर ख़्वाब में ही सही, वो अपना था।
मेरा इश्क़ एकतरफा था, लिहाज़ा
वो पराया कुछ अपना सा था।